उपसंहार

उपसंहार

" गिरिराज शरण द्वारा संपादित 'शिक्षा जगत की कहानियां ' में व्यक्त यथार्थ" के अध्ययन के उपरांत निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आए हैं उनका निचोड़ यहाँ सार रूप में प्रस्तुत है –

शिक्षा से तात्पर्य और वर्तमान भारतीय शिक्षा जगत का प्रारूप एक आकलन :–

प्रस्तुत अध्याय के समग्र अध्ययन के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि भारतीय शिक्षाशास्त्री डॉ. राधाकृष्णन, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, महामना मदनमोहन मालवीय, स्वामी दयानंद सरस्वती और रवींद्रनाथ ठाकुरजी ने 'नैतिक' और 'धार्मिक शिक्षा' को शिक्षा की नींव माना है । रवींद्रनाथजी बालकों को प्रकृति की गोद में शिक्षा देने के पक्ष में थे । सभी विद्वान 'मातृभाषा में शिक्षा' के समर्थक हैं । 'नारी शिक्षा' का सब विद्वान समर्थन करते हैं किंतु स्वामी दयानंद सरस्वती 'सह शिक्षा' का विरोध करते हैं । मुझे इन सब विद्वानों में से महात्माजी के विचार अधिक प्रभावी एवं व्यवहारिक लगते हैं क्योंकि वे यथार्थ और अनुभव पर आधारित हैं । महात्माजी के साथ साथ रवींद्रनाथजी भी व्यवसायिक शिक्षा का समर्थन करते हैं । इसमें संदेह नहीं कि रवींद्रनाथजी और महात्माजी द्वारा बताए गए शिक्षकों के कर्तव्य भविष्य में भी शिक्षकों को पथप्रदर्शन करेंगे । संक्षेप में उक्त सभी भारतीय शिक्षाशास्त्री शिक्षा द्वारा आदर्श एवं चरित्र संपन्न नागरिक बनाना चाहते थे । ' वर्तमान भारतीय शिक्षा नीति का स्वरूप ' के अंतर्गत भी जाति–पाति और लिंग भेद को स्थान नहीं दिया है । खुली और दूरस्थ शिक्षा द्वारा मजदूरों, गृहिणियों, किसानों और व्यापारियों को शिक्षा के अवसर प्रदान किए जाने का प्रयास किया है । अत: यह एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है ।

गिरिराज शरण द्वारा संपादित कहानियों का संक्षेप में परिचय :–

उपर्युक्त अध्याय के विवेचन विश्लेषण के पश्चात मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि विवेच्य कहानियों में शिक्षा जगत से संबंधित सभी प्रमुख घटकों पर प्रकाश डाला है । 'पुस्तकालय प्रसंग', 'मदारी' कहानी में ग्रंथालय की समस्या पर प्रकाश डाला है । 'प्रिंसिपल', 'उपनिवेश', 'अन्धेरे के कैदी' आदि कहानियों में मुख्याध्याप्क एवं प्राचार्य से संबंधित यथार्थ को उद्घटित किया है । 'कोलाहल' और 'इसी शहर में' कहानियों में हड़ताल की समस्या पर प्रकाश डाला है । 'दिशाहीन' और 'वजूद' कहानियों में अस्वस्थ मानसिकता वाले छात्रों का चित्रण किया है । 'स्कूलगाथा' कहानी में अध्यापकों के कथनी और करनी के अंतर को स्पष्ट किया है । 'मामला एक रूष्ट अन्तरात्मा का', 'उपनिवेश', 'अन्धेरे के कैदी' इन कहानियों में अध्यापकों के वेतन की समस्या पर प्रकाश डाला है । 'आलू की आँख' और 'स्कूलगाथा' कहानियों में ग्रामीण विद्यालयों के यथार्थ का उद्घाटन किया है । संक्षेप में कहानिकारों ने अध्यापक, छात्र, प्रबंधक, प्राचार्य एवं प्रिंसिपल, ग्रंथपाल, चपरासी आदि शिक्षा जगत से संबंधित सभी घटकों के यथार्थ को उद्घाटित किया है ।

विवेच्य कहानियों में शिक्षा जगत का व्यक्त यथार्थ :

प्रस्तुत अध्याय के विवेचन – विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष के रूप में जो तथ्य सामने आते हैं वे इस प्रकार है –

शिक्षा के मूल उद्‌देश्यों तक पहुँचने के लिए छात्र, अध्यापक, प्रधानाध्यापक, कर्मचारी, शिक्षा अधिकारी आदि प्रमुख सीढ़ियाँ है । अत: इन सीढ़ियों में से एक भी सीढ़ी कमजोर नहीं होनी चाहिए । आज छात्र समुदाय में असंतोष अधिक पनप रहा है । इस असंतोष का चित्रण विवेच्य कहानियों में किया है । छात्रों में असंतोष के साथ-साथ मानसिक द्‌वंद्‌व भी फैल रहा है । मानसिक द्‌वंद्‌व के अनेक कारणों में से बेरोजगारी एक प्रमुख कारण है । छात्रों को एक ओर परिवार के सदस्य शिक्षा-प्रणाली, परीक्षा-प्रणाली, फैशन, स्वच्छंदता, विलासिता आदि के कारण कोसते हैं तो दूसरी ओर नेता, शिक्षक, सरकारी अधिकारी छात्रों को नियंत्रण से बाहर मानकर कोसते हैं । राजनीतिज्ञों के साथ-साथ अध्यापक भी अपने स्वार्थ के लिए छात्रों का कटपुतली के समान उपयोग कर रहे हैं । 'परथम श्रेणी सबको दो', 'संदर्भ', 'मदारी' कहानियों में इसका यथार्थ चित्रण किया है । छात्र पारिवारिक और सामाजिक अवहेलना के कारण व्यसनों के चंगुल में फँसे नजर आते हैं । 'दिशाहीन', 'स्कूलगाथा', 'इसी शहर में' कहानियों में व्यसनी छात्रों का चित्रण किया गया है । लेकिन 'कोलाहल', 'संदर्भ', 'राख हो चुका समय' कहानियों में आदर्श एवं विनम्र छात्रों का चित्रण किया है । इन कहानियों के छात्र आज के छात्रों के लिए निश्चित ही प्रेरणादायी एवं मार्गदर्शक सिद्‌ध होंगे इसमें संदेह नहीं । जैसे शुभ्रा, मणि, पारसनाथ । छात्रों के साथ-साथ अध्यापकों के गुण-दोषों का भी चित्रण किया गया है । अधिकांश कहानियों में अध्यापकों के निगेटिव्ह पक्ष का ही चित्रण किया है । किंतु कहानीकारों ने 'राख हो चुका समय', 'प्रिंसिपल', कहानियों में अध्यापकों के पॉजिटिव्ह पक्ष का चित्रण कर अध्यापक वर्ग पर लगे धब्बे को मिटाने का प्रयास किया है । कहानीकारों ने शिक्षा जगत के पदाधिकारियों जैसे प्रधानाध्यापक, कुलपति, उपकुलपतियों को भी नहीं छोड़ा है । विवेच्य कहानियों में अधिकांश प्रिंसिपल, हेडमास्टर, कुलपति, उपकुलपति भ्रष्टाचारी, राजनीतिज्ञ, संपत्ति प्रेमी, तानाशाह, चापलूस और निंदक है । अत: यह कहा जा सकता है कि शिक्षा जगत को अंधेरे में रखने के लिए ये लोग ही अधिक जिम्मेदार हैं । ये पदाधिकारी ही अपने अधिकार का दुरूपयोग कर शिक्षा को उलट दिशा में ले जा रहे हैं । इन पदाधिकारियों को सही रास्ते पर लाने के लिए अध्यापकों, छात्रों और कर्मचारियों को संघटित होना आवश्यक है । 'अन्धेरे के कैदी' कहानी का टायपिस्ट रिशी एक मात्र ऐसा कर्मचारी है जो शिक्षा जगत में क्रंतिकारी कदम उठाकर संपूर्ण शिक्षा-व्यवस्था को हिला देता है । अत: कहानीकार ने रिशी के माध्यम से क्रांतिकारी विचार अपनाने का संदेश दिया है ।

विवेच्य कहानियों में व्यक्त यथार्थ समस्याएँ और समाधान :–

प्रस्तुत अध्याय के समूचे अध्ययन के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं वे इस प्रकार है –

विवेच्य कहानियों में शिक्षा जगत से संबंधित अध्यापकों के आर्थिक शोषण की समस्या नौकरी में असुरक्षा की समस्या, योग्यता की उपेक्षा करते हुए सिफारिश से की जानेवाली नियुक्ति की समस्या, संगठन के अभाव की समस्या, गुटबाजी की समस्या, समृद्ध ग्रंथालय के अभाव की समस्या, अयोग्य छात्र नेताओं की समस्या, सदोष परीक्षा प्रणाली की समस्या, सुविधा-सामग्री युक्त इमारतों के अभाव की समस्या, सदोष शैक्षणिक प्रशासन की समस्या, सदोष प्रवेश प्रक्रिया की समस्या, सरकार की ओर से ग्रामीण विद्यालयों की उपेक्षा, नारी-शिक्षा की उपेक्षा अमनोवैज्ञानिक वातावरण, राष्ट्रभाषा हिंदी की उपेक्षा, पैसें का अपव्यय, छात्र-अध्यापकों के संबंधों में आत्मीयता का अभाव, अध्यापक और मुख्याध्यापक के बीच संबंधों में अंतर, सदोष पाठ्यक्रमों की समस्या, हड़ताल एक समस्या और विद्यालयों में राजनीति की समस्याओं का चित्रण किया है । विवेच्य समस्याओं में से विद्यालयों में भ्रष्ट राजनीति की समस्या, छात्र अध्यापकों के संबंधों में आत्मीयता का अभाव और समृद्ध ग्रंथालय के अभाव की समस्या का समाधान 'संदर्भ', 'राख हो चुका समय' और 'मदारी' इन तीन कहानियों में सुझाया है । कुछ कहानिकारों ने यथार्थ समस्याओं की ओर संकेत मात्र किए हैं । जैसे 'इतना बड़ा पुल', 'उपनिवेश', 'दिशाहीन', 'वजूद' इन कहानियों में पैसों का अपव्यय, अमनोवैज्ञानिक वातावरण और सदोष पाठ्यक्रमों की समस्या की ओर संकेत किए है । अधिकांश कहानिकारों ने यथार्थ समस्याओं का खुलकर चित्रण किया है किंतु केवल तीन कहानिकारोंने समस्याओं के समाधान बताए हैं । जैसे 'संदर्भ' कहानी में गांधीवादी विचारधारा को अपनाने का सुझाव दिया है । 'राख हो चुका समय' कहानी में अध्यापकों को फल की अपेक्षा न करते हुए कर्म करने का संदेश दिया है । 'अंधेरे के कैदी' कहानी में अध्यापकों को शोषण के विरुध्द विद्रोह करने का संकेत दिया है ।

विवेच्य कहानियों का शिल्पगत अध्ययन :-

प्रस्तुत अध्याय के समूचे अध्ययन के पश्चात जो निष्कर्ष प्राप्त हुए हैं वे इस प्रकार हैं ।

विवेच्य कहानियों में कहानिकारों ने 'शिल्प' का प्रयोग कलात्मक ढंग से किया है । उन्होंने कथावस्तु को गति देने के लिए या रोचकता लाने के लिए अंतर्कथाओं का भी समावेश किया है । कहानियों की भाषा सरल, भावात्मक एवं पात्रानुकूल है । कहानियों के पात्र और संवाद शिक्षा जगत के यथार्थ को प्रस्तुत करने में सफल हुए हैं । भाषा को परिष्कृत, परिनिष्ठित भावानुकूल एवं पात्रानुकूल बनाने के लिए संस्कृत, देशज, अरबी, फारसी, अँग्रेजी और मुहावरों का सार्थक प्रयोग किया है । प्रत्येक कहानी में एक से अधिक शैली का प्रयोग हुआ है । पत्रात्मक शैली का प्रयोग केवल एक ही कहानी में हुआ है । विवेच्य कहानियों में व्यंग्यात्मक शैली पाठकों पर अधिक प्रभाव डालती है । इस प्रकार विवेच्य कहानियों में शिल्प का सार्थक प्रयोग हुआ है ।

उपलब्धियाँ :–

1. विवेच्य कहानियों में व्यक्त यथार्थ भारत वर्ष के शैक्षणिक परिवेश का प्रतिनिधि रूप है ।
2. विवेच्य कहानियों में प्रधानत: अध्यापक, छात्र और प्राचार्य एवं प्रिंसिपल का चित्रण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है । इनके अतिरिक्त प्रबंधक, कर्मचारी, कुलपति एवं उपकुलपति आदि का चित्रण अत्यल्प मात्रा में मिलता है ।
3. भारतीय शिक्षाशास्त्रियों द्वारा बताये गए आदर्शों के विपरीत स्थिति वर्तमान शिक्षा जगत में दिखाई देती है ।
4. भारतीय शिक्षाशास्त्रियों द्वारा बताये गए आदर्श व्यवहार में प्रयुक्त करने का एकमात्र साधन गांधी विचार धारा हैं ।

अध्ययन की नई दिशाएँ :–

गिरिराज शरण द्वारा संपादित 'शिक्षा जगत की कहानियां' को लेकर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान किया जा सकता है ।

1. गिरिराज शरण द्वारा संपादित 'शिक्षा जगत की कहानियां' में शैक्षणिक संघर्ष एक अनुशीलन
2. गिरिराज शरण द्वारा संपादित 'शिक्षा जगत की कहानियां' में मूल्य–विघटन
3. गिरिराज शरण द्वारा संपादित 'शिक्षा जगत की कहानियां' आज के परिप्रेक्ष्य में ।

उपर्युक्त विषय मुझे अध्ययन के पश्चात प्राप्त हुए हैं जिनपर स्वतंत्र रूप से अनुसंधान हो सकता है । वस्तुत: हर विषय की कुछ अपनी सीमा होती है । यहाँ मेरे अपने शोध विषय की भी सीमा है । शायद भविष्य में आनेवाले शोधार्थी इन विषयों पर शोधकार्य संपन्न करें ।